31 / 10 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्व की संतुष्टता का सर्टिफिकेट प्राप्त कर
महारथीपन का अनुभव

➢➢ इस देह रुपी रथ का रथी मैं आत्मा...

➢➢ साक्षी होकर देख रही हूँ, अपने इस देह रुपी रथ को...

➳ _ ➳ बारी बारी से मैं आत्मा रथी देख रही हूँ...

➳ _ ➳ इसे चलायमान करने वाले सभी इंद्रिय रूपी अश्वों को...

→ ये दो आँखे, दो कान, मुख, नासिका, और मेरी कर्मेन्द्रियां...

→ मन बुद्धि की लगाम, जिस से ये बंधे हैं...

→ मन ही मन स्वयं से प्रश्न पूछती हुई...

- क्या ये सभी अश्व मेरे कंट्रोल में हैं...
- कहीं मन बुद्धि की लगाम ढीली तो नहीं...
- मैं आत्मा रथी अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ रहा हूँ...
- क्या सभी इन्द्रिय एक दूसरे के सहयोगी हैं...

➳ _ ➳ अन्तर्मुखी होकर मैं आत्मा बैठ जाती हूँ...

➳ _ ➳ बाप दादा के चित्र के ठीक सामने...

→ बरसती दूधिया चांदनी में...

→ अपनी झिलमिल- झिलमिल करती फरिश्ताई काया...

→ अपने रूहानी नैनों से प्योरिटी...

→ और यूनिटी का सैलाब बहाते हुए बापदादा...

→ मन बुद्धि संस्कार सहित..

→ सभी इन्द्रियों में गजब की यूनिटी...

→ कमाल की एकता हैं...

- सभी एक ही रस में डूबी हुई....
- केवल और केवल रूहानी प्रेम से लबालब...
- मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व मधुमय होता जा रहा हैं...
- प्रभु प्रेम रोम रोम से उमड़ रहा हैं...
- सभी कर्मेन्द्रिया एक दूसरे की सहयोगी बन..
- एक रस होती जा रही हैं...
- मैं आत्मा भरपूर होती जा रही हूँ...
- मैं आत्मा पूरी तरह संतुष्ट होती जा रही हूँ...

➳ _ ➳ परम संतुष्टता का अनुभव करती मैं आत्मा...

➳ _ ➳ लाइट माईट बन उड़ चली परमधाम की ओर...

→ खिले हुए सूरज मुखी की पंखुरियों के समान...

→ अपनी किरणें बिखेरते शिव पिता...

→ नन्हीं चमचमाती तितली के समान...

→ बैठ गयी हूँ मैं आत्मा उनकी गोद में...

→ किरणों को स्वयं में समाती हुई-सी...

→ मैं आत्मा परम स्नेह को पाकर मोल्ड होती जा रही हूँ...

- मन बुद्धि और संस्कार...
- सभी में रीयल गोल्ड बनती जा रही हूँ...
- मुझ से संतुष्टता की किरणें...
- पूरे कल्प वृक्ष को जा रही हैं...
- कल्प की सभी आत्माए संतुष्ट होती जा रही हैं...

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा रथी, वापस लौट रही हूँ...

➳ _ ➳ अपने देह रुपी रथ की ओर...

→ भृकुटी के मध्य में बैठकर देख रही हूँ,

→ एक एक इंद्रिय रुपी अश्व को...

→ मन बुद्धि की संतुलित और मजबूत लगाम को...

→ जीवन की श्रीमत रुपी श्रेष्ठ पगडण्डी को...

- अब मैं आत्मा रथी नही,
- महारथी हूँ...
- मेरी सभी इंद्रिय एकरस है,
- पूर्ण सहयोगी है...
- मैं आत्मा सम्पूर्ण संतुष्ट हूँ...
- सभी आत्माए मुझसे पूर्ण संतुष्ट है...